Knowledgeable Research (KR)
ISSN: 2583-6633 | CODEN: KRABAU
International Open-Access Peer-Reviewed Refereed Multidisciplinary Journal
https://knowledgeableresearch.com
Vol. 5, Issue 05, May,2026

Received: 09/04/2026 | Accepted: 21/05/2026 | Published: 30/05/2026

"वैदिक शिक्षा-पद्धति में नवाचार"

डॉ. विक्रान्त उपाध्याय*

एसोसिएट प्रोफेसर, बी.एड. विभाग, ने.मे.शि.ना.दास (पी.जी.) कॉलेज,बदायूँ

DOI: https://doi.org/10.57067/kr.05.i05/880

Abstract

वैदिक शिक्षा-पद्धति भारतीय ज्ञान-परम्परा का मूल आधार रही है, जिसमें व्यक्ति के समग्र विकास—शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक—पर विशेष बल दिया गया। वर्तमान वैश्वीकरण एवं तकनीकी युग में शिक्षा के स्वरूप में व्यापक परिवर्तन हुए हैं, किन्तु वैदिक शिक्षा के मूल सिद्धान्त आज भी प्रासंगिक हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र में वैदिक शिक्षा-पद्धति के स्वरूप, उसके प्रमुख तत्त्वों तथा उसमें सम्भावित नवाचारों का विश्लेषण किया गया है, जिससे आधुनिक शिक्षा को अधिक मानवीय, मूल्यपरक और समन्वित बनाया जा सके। भारतीय शिक्षा परम्परा का मूलाधार संस्कृत वाङ्मय रहा है, जिसमें ज्ञान, विज्ञान, नैतिकता एवं जीवन-दर्शन का समन्वित स्वरूप विद्यमान है। नयी शिक्षा नीति (NEP-2020) भारतीय ज्ञान-परम्परा के पुनरुत्थान की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस शोध-पत्र में संस्कृत वाङ्मय की शैक्षिक विशेषताओं तथा NEP-2020 में इसके समावेशन का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि नयी शिक्षा नीति, संस्कृत भाषा एवं भारतीय ज्ञान प्रणाली को आधुनिक शिक्षा के साथ समन्वित कर समग्र विकास की ओर उन्मुख है।

Keywords: *वैदिक शिक्षा, नयी शिक्षा नीति, समग्र विकास, नवाचार*

***Corresponding Author:**
डॉ. विक्रान्त उपाध्याय
Email: upadhyayavikrant@gmail.com

1. प्रस्तावना

भारतीय शिक्षा परम्परा का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है, जिसका मूल स्रोत वेद हैं। वैदिक शिक्षा-पद्धति का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि जीवन को सार्थक एवं संतुलित बनाना था। इस पद्धति में "सा विद्या या विमुक्तये" के सिद्धान्त के अनुसार शिक्षा का लक्ष्य व्यक्ति को अज्ञान, बन्धन एवं अंधकार से मुक्त करना था।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में यद्यपि वैज्ञानिकता एवं तकनीकी दक्षता का विकास हुआ है, तथापि नैतिक मूल्यों, चरित्र-निर्माण एवं जीवनोपयोगिता की दृष्टि से कई कमियाँ दिखाई देती हैं। ऐसे में वैदिक शिक्षा-पद्धति में नवाचारों की आवश्यकता अनुभव की जाती है, जिससे प्राचीन ज्ञान और आधुनिक तकनीक का समन्वय स्थापित हो सके।

2. वैदिक शिक्षा-पद्धति का स्वरूप

वैदिक शिक्षा-पद्धति मुख्यतः गुरुकुल प्रणाली पर आधारित थी। इसमें विद्यार्थी (ब्रह्मचारी) गुरु के आश्रम में निवास कर शिक्षा ग्रहण करते थे। शिक्षा का माध्यम मुख्यतः श्रुति एवं स्मृति था।

5. संस्कृत वाङ्मय एवं **NEP-2020** का समन्वय

संस्कृत वाङ्मय

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

NEP-2020

गुरुकुल प्रणाली

अनुभवात्मक शिक्षा

समग्र ज्ञान

बहुविषयक शिक्षा

नैतिक मूल्य

मूल्य-आधारित शिक्षा

संस्कृत भाषा

बहुभाषिकता

यह स्पष्ट है कि **NEP-2020** प्राचीन शिक्षा प्रणाली के सिद्धान्तों को आधुनिक संदर्भ में पुनः स्थापित करती है।

प्रमुख विशेषताएँ

गुरुकुल प्रणाली – विद्यार्थी गुरु के सान्निध्य में रहकर शिक्षा प्राप्त करता था।

समग्र विकास – शिक्षा केवल बौद्धिक नहीं, बल्कि शारीरिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास पर आधारित थी।

अनुभव आधारित शिक्षा – जीवन के व्यवहारिक पक्षों पर बल दिया जाता था।

नैतिक शिक्षा – सत्य, अहिंसा, संयम, सेवा आदि मूल्यों का विकास।

अनुशासन एवं आत्मसंयम – ब्रह्मचर्य एवं संयमित जीवन पर बल।

3. वैदिक शिक्षा के उद्देश्य

वैदिक शिक्षा-पद्धति के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित थे—

आत्मज्ञान की प्राप्ति

चरित्र-निर्माण

सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास

प्रकृति के साथ सामंजस्य

आध्यात्मिक उन्नति

4. वैदिक शिक्षा-पद्धति की प्रासंगिकता

आज के समय में शिक्षा केवल रोजगार प्राप्ति का साधन बनकर रह गई है। नैतिक मूल्यों का ह्रास, मानसिक तनाव, सामाजिक असंतुलन जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं। ऐसे में वैदिक शिक्षा-पद्धति की निम्नलिखित दृष्टियों से प्रासंगिकता है—

मूल्यपरक शिक्षा का विकास

मानसिक शान्ति एवं संतुलन

पर्यावरण संरक्षण की भावना

जीवन कौशल का विकास

5. वैदिक शिक्षा-पद्धति में नवाचार की आवश्यकता

यद्यपि वैदिक शिक्षा-पद्धति अत्यन्त समृद्ध थी, किन्तु वर्तमान युग की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उसमें कुछ नवाचार आवश्यक हैं—

तकनीकी समावेशन की कमी

व्यापकता का अभाव

आधुनिक विषयों का समावेश नहीं

वैश्विक दृष्टिकोण की आवश्यकता

6. वैदिक शिक्षा-पद्धति में संभावित नवाचार

(क) तकनीकी समन्वय

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

आधुनिक डिजिटल तकनीकों जैसे ई-लर्निंग, ऑनलाइन शिक्षा, स्मार्ट कक्षाओं आदि को वैदिक शिक्षा के साथ जोड़ा जा सकता है। इससे ज्ञान का प्रसार व्यापक स्तर पर संभव होगा।

(ख) गुरुकुल प्रणाली का पुनरुद्धार (आधुनिक रूप में)

गुरुकुल प्रणाली को आधुनिक आवासीय विद्यालयों के रूप में विकसित किया जा सकता है, जहाँ विद्यार्थी अनुशासन, स्वावलम्बन एवं नैतिकता का अभ्यास करें।

(ग) पाठ्यक्रम में समन्वय

वैदिक साहित्य के साथ-साथ विज्ञान, गणित, प्रौद्योगिकी, प्रबंधन आदि विषयों को सम्मिलित किया जाए। इससे विद्यार्थी परम्परा एवं आधुनिकता दोनों से परिचित होंगे।

(घ) मूल्यपरक शिक्षा का समावेश

आधुनिक शिक्षा में नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को सम्मिलित किया जाए। उदाहरणतः—योग, ध्यान, प्रार्थना, सेवा-कार्य आदि।

(ङ) अनुभवात्मक शिक्षा (Experiential Learning)

प्रकृति के साथ जुड़कर शिक्षा देने की पद्धति विकसित की जाए, जैसे—कृषि, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक सेवा आदि।

(च) शिक्षक-विद्यार्थी सम्बन्ध का सुदृढ़ीकरण

गुरु-शिष्य परम्परा के आदर्श को पुनर्जीवित करते हुए शिक्षक को केवल ज्ञानदाता नहीं, बल्कि मार्गदर्शक के रूप में स्थापित किया जाए।

(छ) भारतीय भाषाओं का प्रोत्साहन

संस्कृत एवं अन्य भारतीय भाषाओं के अध्ययन को बढ़ावा देकर सांस्कृतिक जड़ों को मजबूत किया जा सकता है।

7. वैदिक शिक्षा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020)

नयी शिक्षा नीति (**NEP-2020)** का स्वरूप

मुख्य उद्देश्य

समग्र विकास (**Holistic Development)**

कौशल आधारित शिक्षा

भारतीय ज्ञान प्रणाली का समावेश

बहुभाषिकता को प्रोत्साहन

प्रमुख विशेषताएँ

5+3+3+4 शिक्षा संरचना

मातृभाषा/स्थानीय भाषा में शिक्षा

बहुविषयक शिक्षा प्रणाली

डिजिटल शिक्षा का विस्तार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी वैदिक शिक्षा के कई तत्वों का समावेश देखा जा सकता है—

बहुआयामी शिक्षा

कौशल विकास

मातृभाषा में शिक्षा

नैतिक एवं मूल्यपरक शिक्षा

इस प्रकार, आधुनिक नीतियाँ भी वैदिक शिक्षा के सिद्धान्तों से प्रेरित हैं।

संस्कृत वाङ्मय भारतीय शिक्षा का आधार है, जबकि नयी शिक्षा नीति (**NEP-2020)** इसे आधुनिक शिक्षा प्रणाली में पुनः स्थापित करने का प्रयास करती है। यदि नीति का प्रभावी क्रियान्वयन किया जाए, तो यह न केवल भारतीय संस्कृति का संरक्षण करेगी, बल्कि वैश्विक स्तर पर भारत को ज्ञान-प्रधान राष्ट्र के रूप में स्थापित करेगी।

8. चुनौतियाँ एवं समाधान

चुनौतियाँ

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

पारम्परिक और आधुनिक शिक्षा के बीच समन्वय का अभाव

संसाधनों की कमी

शिक्षकों का प्रशिक्षण

सामाजिक स्वीकृति

समाधान

समन्वित पाठ्यक्रम का निर्माण

शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम

तकनीकी संसाधनों का विकास

जागरूकता अभियान

19वीं–20वीं शताब्दी: शैक्षिक नवाचार का औपचारिक उदय

•इस काल में कई शिक्षाशास्त्रियों ने नए विचार प्रस्तुत किए—

•बालकेंद्रित शिक्षा (**Child-centered education)**

•अनुभव आधारित शिक्षा (**Learning by doing)**

•मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का समावेश

यहीं से "**Innovation in Education"** एक स्पष्ट अवधारणा के रूप में उभरता है।

स्वतंत्रता के बाद (भारत में) नवाचार

•शिक्षा आयोगों (जैसे राधाकृष्णन आयोग, कोठारी आयोग) ने सुधार सुझाए गए।

•सर्व शिक्षा अभियान, नवोदय विद्यालय, आदि योजनाएँ शुरू हुईं।

•शिक्षा को अधिक समावेशी और व्यावहारिक बनाने पर बल दिया गया। 21वीं सदी: डिजिटल एवं तकनीकी नवाचार

•स्मार्ट क्लास, ई-लर्निंग, ऑनलाइन शिक्षा (जैसे **MOOCs)**

•आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, वर्चुअल क्लासरूम

•नई शिक्षा नीति (**NEP-2020)** में कौशल-आधारित एवं बहु-विषयी शिक्षा पर बल दिया गया।

यह शिक्षा नवाचार का सबसे तीव्र और व्यापक चरण है।

9. निष्कर्ष

शिक्षा में नवाचार का प्रारंभ मानव की सीखने की जिज्ञासा और समाज की बदलती आवश्यकताओं से हुआ। गुरुकुल से लेकर डिजिटल शिक्षा तक की यात्रा यह स्पष्ट करती है कि नवाचार शिक्षा का अभिन्न अंग रहा है और भविष्य में भी रहेगा।

वैदिक शिक्षा-पद्धति भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर है, जिसमें जीवन के प्रत्येक पक्ष को संतुलित रूप से विकसित करने की क्षमता है। वर्तमान युग में इसकी प्रासंगिकता और भी बढ़ गई है। यदि इसमें आधुनिक तकनीक, वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं वैश्विक परिप्रेक्ष्य को सम्मिलित कर नवाचार किए जाएँ, तो यह शिक्षा-पद्धति न केवल भारत, बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए आदर्श बन सकती है।

अतः आवश्यक है कि हम वैदिक शिक्षा के मूल सिद्धान्तों को अपनाते हुए उन्हें आधुनिक संदर्भों में विकसित करें, जिससे एक सशक्त, नैतिक एवं समृद्ध समाज का निर्माण संभव हो सके।

संदर्भ (References)

1.शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

2.वेद, उपनिषद, भगवद्गीता

3.शर्मा, रामनाथ. भारतीय शिक्षा का इतिहास

4.तिवारी, कपिलदेव. संस्कृत वाङ्मय का परिचय

5.Radhakrishnan, S. Indian Philosophy

6.NCERT. (2022). Foundational Literacy and Numeracy Guidelines.

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

7.University Grants Commission (UGC). (2021).

8. Higher Education Guidelines under NEP 2020.

9.IGNOU Study Materials on Indian Knowledge System (IKS).

10.Education and the Significance of Life – Jiddu Krishnamurti

Krishnamurti, J. (1953). Education and the Significance of Life. Harper & Row.

11.Pedagogy of the Oppressed – Paulo Freire

Freire, P. (1970).

12.Pedagogy of the Oppressed. Continuum.

Deschooling Society – Ivan Illich

Illich, I. (1971).

13. Deschooling Society. Harper & Row.

14.Experiential Learning – David A Kolb

Kolb, D. A. (1984).

15.Experiential Learning. Prentice Hall.

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)